# "भाजपा प्रणाली के अंतर्गत नए पेचीदा गठबंधनबिहार का परिप्रेक्ष्य :"

Suman Kumar Suman[1], Prof. (Dr).Anant Prasad Gupta[1]
1. Research Scholar Department of History, Purnea University Purnea
Corresponding Author: sumankumarsuman026@gmail.com

**सारांश**: 2014 के लोकसभा चुनाव भारतीय राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण विभाजन रेखा सिद्ध हुए, जब लगभग तीन दशकों से चले आ रहे बहुदलीय गठबंधन सरकारों का दौर समाप्त हुआ और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर एकदलीय शासन की शुरुआत की। इसके बाद भाजपा ने अपनी पकड़ और मजबूत की, अधिकांश राज्यों में सत्ता हासिल की तथा 2019 के आम चुनावों में और भी बड़े जनादेश के साथ पुनः लौटी। यद्यपि समकालीन साहित्य प्रायः इसे गठबंधन राजनीति के अवसान के रूप में देखता है, वास्तविकता यह है कि गठबंधन राजनीति समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसने नए स्वरूप और चरित्र ग्रहण किए हैं तथा 2014 के बाद के कालखंड में राज्यों के स्तर पर और अधिक महत्त्वपूर्ण बन गई है। ऐसे में यह प्रश्न उठते हैं: भारत की बदलती पार्टी प्रणाली में गठबंधनों को कहाँ स्थित किया जाए? गठबंधन निर्माण की प्रवृत्तियाँ और गतिशीलताएँ किस प्रकार विविध रही हैं? और इन्हें अब भी क्यों रहस्यमय माना जाना चाहिए? बिहार का उदाहरण इस संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी है। नीतीश कुमार के बार-बार के पुनर्संयोजन—भाजपा से नाता तोड़ना, राजद के साथ गठबंधन करना और कांग्रेस के साथ *महागठबंधन* का पुनर्जीवन—2014 के बाद उनकी तीसरी बड़ी राजनीतिक पलटी है, जो राज्य-स्तरीय गठबंधनों की तरल और परिवर्तित प्रकृति को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। इस प्रकार बिहार, गठबंधन राजनीति के नए स्वरूप तथा भारतीय पार्टी प्रणाली और राष्ट्रीय राजनीति पर उसके व्यापक प्रभावों के विश्लेषण का केंद्र बिंदु बनता है।

[Suman, S.K. **भाजपा प्रणाली के अंतर्गत नए पेचीदा गठबंधनबिहार का परिप्रेक्ष्य :"**. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 3, Issue 1:297-302 (July-September). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

**कीवर्ड्स:** रहस्यमयी गठबंधन, भाजपा प्रणाली, बिहार की राजनीतिक यात्रा, राज्य पार्टी प्रणाली में बदलाव, परिवर्तित गठबंधन गतिशीलता, राष्ट्रीय राजनीति

## बिहार की वर्तमान राजनीति

### सत्ता पक्ष

- नीतीश कुमार की पार्टी *जनता दल (यूनाइटेड)* [जद(यू)] राज्य स्तर पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल है।
- यह गठबंधन अपनी बहुमत स्थिति बनाए हुए है। उदाहरण के लिए, 2024 की शुरुआत में नीतीश कुमार ने विश्वास मत जीतते हुए 129 विधायकों का समर्थन प्राप्त किया, जो भाजपा-नेतृत्व वाले एनडीए के पक्ष में गया।

### विपक्ष और गठबंधन

- मुख्य विपक्षी मोर्चा *महागठबंधन* है, जिसमें राजद (राष्ट्रीय जनता दल), कांग्रेस और वामदलीय दल शामिल हैं।
- इसके अतिरिक्त एक नई पार्टी *जन सुराज पार्टी* (प्रशांत किशोर द्वारा स्थापित) भी उभर रही है, जो स्वयं को एनडीए और महागठबंधन दोनों के विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर रही है।

### चुनाव समयरेखा

- अगला बिहार विधानसभा चुनाव अक्टूबर-नवंबर 2025 में प्रस्तावित है, क्योंकि वर्तमान विधानसभा का कार्यकाल 22 नवंबर 2025 को समाप्त होगा।
- चुनाव को देखते हुए सभी दल सक्रिय हैं: विपक्षी दल रैलियों का आयोजन कर रहे हैं और राजनीतिक गतिविधियाँ तेज़ हो गई हैं।

### मुख्य मुद्दे और दावे

- विपक्ष (जैसे राजद के नेता तेजस्वी यादव) सरकार पर भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था की कमज़ोरियों को लेकर हमला बोल रहे हैं और जवाबदेही की मांग कर रहे हैं।
- एनडीए (भाजपा + जद(यू)) अपनी उपलब्धियों को विकास कार्यों (सड़कें, अवसंरचना परियोजनाएँ) तथा केंद्र व राज्य की योजनाओं के क्रियान्वयन के रूप में पेश कर रहा है।
- विपक्ष विशेष राज्य का दर्जा और देशव्यापी जाति जनगणना जैसी माँगों को भी उठा रहा है।

### मतगणित और क्षेत्रीय समीकरण

- बिहार की राजनीति में जातिगत समीकरण अब भी केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। महागठबंधन का "एमवाई समीकरण" (मुस्लिम + यादव) राजद का मुख्य वोट बैंक है।

- एनडीए का आधार भाजपा के ऊँची जातियों, कुर्मी तथा अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) में प्रभाव पर टिका है।
- सीमांचल (पूर्वोत्तर बिहार का मुस्लिम बहुल इलाका), मिथिला (उत्तर बिहार), तथा swing क्षेत्र जैसे कोसी और अंग क्षेत्र चुनावी दृष्टि से विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण माने जा रहे हैं।

**I. परिचय**

भारत की राज्यीय राजनीति की बढ़ती स्वायत्तता, जिसने राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य के समानांतर अपना एक अलग तर्क और लय प्राप्त कर लिया है, अत्यंत रोचक और महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई है। इसका सबसे जीवंत उदाहरण बिहार की राजनीति में देखा जा सकता है, जिसकी राजनीतिक यात्रा भारत की पार्टी प्रणाली के व्यापक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करती है।

भारत की पार्टी प्रणाली के विकास का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने इसके विभिन्न चरणों की पहचान की है। **कांग्रेस प्रणाली (1952–1967)** उस दौर को दर्शाती है जब कांग्रेस पार्टी ने राजनीतिक स्पेक्ट्रम के वाम और दक्षिण, दोनों हिस्सों पर प्रभुत्व जमाया हुआ था। प्रारम्भिक 'सहमति आधारित शासन शैली' धीरे-धीरे कमजोर हुई और चुनावी राजनीति अधिक खंडित हो गई, जिसमें कांग्रेस ने अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए कुछ चुनिंदा समुदायों पर निर्भर रहना शुरू किया। इसके बाद **जाति आधारित राजनीतिक दलों के उदय और क्षेत्रीय भावनाओं के सुदृढ़ीकरण** ने केंद्र और राज्यों की पार्टी प्रणालियों के बीच स्पष्ट विखंडन पैदा किया (1967–1989)। अंततः यह दौर **बहुदलीय गठबंधनों (1989–2014)** में परिणत हुआ, जिसमें क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय सरकारों के निर्माण और विघटन में निर्णायक भूमिका निभाने लगे।

**2014 के आम चुनावों** में भाजपा की भारी जीत और उसके बाद **2019 में और भी बड़े जनादेश** ने इस परिदृश्य में एक नया मोड़ ला दिया। विद्वानों ने इन परिणामों की व्याख्या अलग-अलग दृष्टिकोणों से की। एक समूह ने इसे गठबंधन युग के निर्णायक अंत के रूप में देखा और भाजपा को भारत की पार्टी प्रणाली का केंद्रीय ध्रुव घोषित किया। दूसरा समूह इन जीतों को कमतर आँकते हुए इन्हें भारतीय राजनीति का 'क्षणिक दौर' करार देता है। जबकि तीसरा दृष्टिकोण भाजपा की बढ़ती शक्ति को स्वीकार करता है, परंतु यह भी मानता है कि क्षेत्रीय दल और गठबंधन अब भी अस्तित्व में हैं और भारत की **चौथी पार्टी प्रणाली** के ढाँचे में सह-अस्तित्व बनाए हुए हैं। इस प्रकार गठबंधन राजनीति आज भी एक पहेली बनी हुई है।

जैसा कि इवान डोहर्टी ने सटीक रूप से कहा है—गठबंधन "सत्ता में बहुमत सुरक्षित करने के लिए, विपक्ष में एक विश्वसनीय विकल्प प्रस्तुत करने के लिए, और चुनावों में समर्थन को अधिकतम करने के लिए" होते हैं। **1947 से 2022** के बीच भारत ने **13 गठबंधन सरकारों** और **एक अल्पमत सरकार** (जो छोटे दलों के समर्थन पर आधारित थी) को केंद्र में देखा है। किंतु राज्यों का परिदृश्य और भी जटिल है। ई. श्रीधरन (2022) के अनुसार, **1991 से 2014 के बीच कम से कम 157 उल्लेखनीय गठबंधन मामले** सामने आए और यह संख्या तब से लगातार बढ़ती गई है। 2014 के बाद राज्यों में हुए लगभग **50 विधानसभा चुनावों** में से **27 चुनावों** का परिणाम गठबंधन सरकारों के रूप में निकला, चाहे भाजपा के साथ साझेदारी में हो या उसके विरोध में। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे या पराजित गठबंधन भी बने जो सत्ता तक नहीं पहुँच सके।

इस संदर्भ में **बिहार की भूमिका केंद्रीय** है। 2014 के बाद से नीतीश कुमार के लगातार गठबंधन बनाना, तोड़ना और पुनर्गठन—बिना मुख्यमंत्री चेहरे में परिवर्तन किए—न केवल राज्य की राजनीतिक समीकरणों को बदलता रहा है, बल्कि समकालीन भारत में गठबंधन राजनीति की जटिलताओं को और गहरा करता गया है। बिहार का यह अनुभव दर्शाता है कि गठबंधन राजनीति समाप्त नहीं हुई है, बल्कि वह और भी तरल, बदलती और रहस्यमयी स्वरूप धारण कर चुकी है।

**II. साहित्य समीक्षा और अनुसंधान पद्धति**

जैसे-जैसे विभिन्न उपराष्ट्रीय इकाइयाँ भिन्न चुनावी व्यवहार प्रदर्शित करने लगीं, **मायरन वीनेर (Myron Weiner)** के कार्यों से लेकर **जॉन वुड (John Wood)** और **इक़बाल नारायण (Iqbal Narain)** के अध्ययनों तक ने *'राज्य राजनीति'* के अध्ययन को नई गति दी। परंतु सबसे निर्णायक योगदान **सुभाष पलशीकर** और **योगेंद्र यादव** द्वारा प्रतिपादित *'दस थीसिस'* के रूप में सामने आया, जिसने 1990 के दशक से गतिशील रूप से विकसित हो रही राज्य राजनीति की सूक्ष्मताओं को समझने के लिए एक तुलनात्मक ढाँचा प्रदान किया।

बिहार इस संदर्भ में कोई अपवाद नहीं है। यह व्याख्याओं के लिए पूरी तरह उपयुक्त प्रतीत होता है, क्योंकि यहाँ की राजनीति जातिगत समीकरणों पर आधारित रही है। **कांग्रेस के पतन** की भरपाई **जनता दल** के उदय ने की, जो आगे चलकर **जद (यू)** और **राजद (RJD)** में विभाजित हो गया। राजनीतिक विकल्पों के विस्तार ने जरूरी नहीं कि राज्य में लोकतांत्रिक परिणामों की गुणवत्ता को बढ़ाया हो। **संतोष शास्त्री** ने **जेपी आंदोलन** और **मंडल आंदोलन** को राज्य की राजनीतिक यात्रा के निर्णायक मोड़ के रूप में पहचाना। साथ ही उन्होंने बिहार की राजनीति में भगवा दल (भाजपा) के उभार को भी एक परिभाषित क्षण माना। **कांता मुरली** और **आशुतोष कुमार** ने समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति को कुशलता से जोड़ते हुए दर्शाया कि गुजरात और पंजाब की अपेक्षाकृत स्थिर चुनावी गठबंधनों की तुलना में बिहार की औद्योगिक नीतियाँ बदलते गठबंधन समर्थन के कारण निरंतर बदलती रहीं—*राजद-कांग्रेस* की *संकीर्ण गरीब* राजनीति से *जद (यू)-भाजपा* की

*विस्तृत गरीब* राजनीति तक, जिसे **अरुणा सिन्हा** ने *नितीश कुमार के सत्ता में आने के साथ बिहार के विकासात्मक प्रक्षेपवक्र में एक विशिष्ट बदलाव* के रूप में देखा।

भाजपा की 2014 की जीत के बाद बहुत कुछ बदला। **संजय कुमार** ने बिहार की *पोस्ट-मंडल* वोटिंग और गठबंधन निर्माण के पैटर्न की गहराई से पड़ताल की, जो राज्य की मौजूदा उतार-चढ़ाव भरी गठबंधन राजनीति को समझने में सबसे प्रभावशाली योगदान है।

हालाँकि, अत्यंत समकालीन घटनाक्रमों और केंद्र में एक-दलीय प्रभुत्व के साथ राज्य स्तर पर जटिल गठबंधन संरचनाओं को समझने में अभी भी शैक्षणिक साहित्य में स्पष्ट शून्य है। इस कारण समाचार पत्रों की रिपोर्टें, डिजिटल मीडिया क्लिपिंग्स और प्रतिष्ठित पत्रिका प्रकाशनों पर निर्भर रहना आवश्यक हो जाता है। इसके साथ ही प्रत्यक्ष साक्षात्कार डेटा भी अद्यतन विश्लेषण के लिए अनिवार्य हो जाता है।

यह शोध पत्र मेरे **स्नातक शोध प्रबंध** *'New Enigmatic Coalitions and the Changing Party System in India: Implications for 2024'* पर आधारित है, जिसमें बिहार के अतिरिक्त तीन अन्य मामलों पर भी विचार किया गया है—जम्मू-कश्मीर में **भाजपा-पीडीपी (2015–2018)**, कर्नाटक में **कांग्रेस-जेडी(एस) (2018–2019)** और महाराष्ट्र में **महा विकास आघाड़ी (2019–2022)**।

इसमें जनवरी-फरवरी 2022 के दौरान राज्य से लगभग **50 यादृच्छिक रूप से चुने गए उत्तरदाताओं** पर आधारित एक **ऑनलाइन सर्वेक्षण** भी शामिल है, जिसका उद्देश्य *महागठबंधन 1.0* (जद (यू)-राजद-कांग्रेस), जिसने 2015–2017 के बीच बिहार पर शासन किया, के प्रति जनमानस की धारणा को समझना था।

राजनीतिक समाजशास्त्र दृष्टिकोण अपनाते हुए, यह शोध पत्र न केवल बिहार की राजनीतिक यात्रा का अनुक्रम प्रस्तुत करता है और राज्य की पार्टी प्रणाली में हुए बदलावों का मूल्यांकन करता है, बल्कि इसके ऐतिहासिक विशिष्टताओं और सामाजिक-राजनीतिक विशेषताओं का भी व्याख्यात्मक विवरण देता है। विशेषकर 2015 के बाद के दौर में बदलते गठबंधन समीकरणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह शोध अंत में एक सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें 2024 के आम चुनावों की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय राजनीति पर इसके प्रभावों की पड़ताल की गई है।

## III. बिहार में गठबंधनों का मानचित्रण

'हिंदी हृदयभूमि' (Hindi Heartland) की राजनीतिक प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से गंगा के किनारे बसे बिहार राज्य में परिलक्षित होती हैं। 1967 तक कांग्रेस पार्टी का दबदबा बना रहा। यह वर्ष केवल केंद्र में ही नहीं, जहाँ कांग्रेस मामूली बहुमत से सत्ता में रही, बल्कि राज्य स्तर पर भी अहम साबित हुआ, क्योंकि एक साथ 9 राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारों का गठन हुआ। बिहार राजनीतिक प्रयोगों की उपजाऊ भूमि के रूप में उभरा।

यहाँ बड़ी **ओबीसी आबादी** और उल्लेखनीय **मुस्लिम जनसंख्या** रही, जबकि ऊँची जातियाँ मात्र 20% से कम थीं। इसके बावजूद कांग्रेस शुरुआती वर्षों में उन्हीं के नियंत्रण में रही। अन्य पिछड़े वर्गों को कांग्रेस ने 'ऊपर से नीचे तक आश्रय आधारित रिश्तों' में बाँधकर रखा। लेकिन कांग्रेस की प्रभुत्वशाली स्थिति को चुनौती **ओबीसी की राजनीतिक लामबंदी** से मिली। जनता पार्टी की जीत और **कर्पूरी ठाकुर** का मुख्यमंत्री बनना इस प्रवृत्ति का स्पष्ट संकेत था।

हालाँकि कांग्रेस ने 1980 के दशक में वापसी की, लेकिन वह अल्पकालिक रही। 1990 के दशक में **क्षेत्रीय नेताओं का उदय** शुरू हुआ।

- **राजद (RJD)** ने यादव और मुस्लिम वोटों को आधार बनाकर **लालू प्रसाद यादव** को सत्ता तक पहुँचाया और जेल में रहते हुए उनकी पत्नी **राबड़ी देवी** मुख्यमंत्री बनीं।
- **नितीश कुमार** की **समता पार्टी (अब जद-यू)** ने कोइरी, कुर्मी और गैर-यादव ओबीसी समुदायों का समर्थन मजबूत किया।
- इसी दौरान **भाजपा** रामजन्मभूमि आंदोलन की लहर पर सवार होकर ऊँची जातियों और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों (EBCs) का बड़ा हिस्सा अपने साथ जोड़ने लगी।
- कांग्रेस चौथे खिलाड़ी के रूप में सिमट गई और 'जातिगत परिदृश्य का बढ़ता विखंडन' बिहार की चुनावी राजनीति में परिलक्षित हुआ, जिससे स्थिरता के लिए गठबंधन आवश्यक हो गया।

**राजद–कांग्रेस गठबंधन** के बाद **जद(यू)–भाजपा** का दौर शुरू हुआ। कांता मुरली (Jeffrey, 2012 के हवाले से) ने इसे *'संकीर्ण गरीब गठबंधन'* से *'विस्तृत गरीब गठबंधन'* की ओर बदलाव कहा, जिसने 2010 के चुनावों में भारी जीत दर्ज की।

21वीं सदी के दूसरे दशक की शुरुआत में ही जद(यू)–भाजपा गठबंधन में तनाव बढ़ने लगा। नितीश कुमार ने भाजपा से 'तलाक' ले लिया क्योंकि वे नरेंद्र मोदी को एनडीए का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार मानने को तैयार नहीं थे। नतीजा यह हुआ कि 2014 लोकसभा चुनावों में भाजपा ने अकेले 40% वोट और 40 में से 32 सीटें जीत लीं। विपक्षी दल एकल अंकों तक सिमट गए।

इस करारी हार ने लालू और नितीश, दोनों खेमों को **एक-दूसरे के करीब लाने** में अहम भूमिका निभाई और 2015 विधानसभा चुनावों के मद्देनज़र **राजद-जद(यू)-कांग्रेस का महागठबंधन** अस्तित्व में आया।

## IV. 2015 के बाद बदलती गतिशीलताराज्य पार्टी : प्रणाली में बदलाव

**महागठबंधन 1.0 (नवंबर 2015 – जुलाई 2017)**

इस गठबंधन का राज्य की पार्टी प्रणाली पर क्या असर पड़ा, इसे समझने के लिए **संजय कुमार** और **प्रणव गुप्ता (2015)** ने तीन पहलुओं पर विश्लेषण प्रस्तुत किया:

1. **मत प्रतिशत का अंतर:** सामान्यतः *फर्स्ट पास्ट द पोस्ट (FPTP)* प्रणाली में 5% वोट का अंतर आरामदायक बहुमत सुनिश्चित कर देता है। 2015 में महागठबंधन ने 7% की बढ़त के साथ एनडीए को मात दी (महागठबंधन 41.4% बनाम एनडीए 34%)।
2. **जातिगत गणित:**
   - यादव, मुस्लिम, कुर्मी, कोइरी और बड़े पैमाने पर ओबीसी समुदाय महागठबंधन के साथ रहे।
   - भाजपा का महादलितों में अपेक्षित समर्थन नहीं मिल सका।
   - ईबीसी में भी भाजपा की बढ़त 2014 की तुलना में 10% तक घट गई।
   - शहरी सीटों में भाजपा की मामूली बढ़त रही लेकिन ग्रामीण इलाकों में महागठबंधन ने भारी जीत हासिल की।
   - परिणामस्वरूप *'मंडल' ने 'कमंडल' (हिंदुत्व) को मात दी,* और पहचान-आधारित राजनीति की ताकत पुनः सिद्ध हुई।
3. **परस्पर वोट हस्तांतरण और नेतृत्व:**
   - लोकनीति-CSDS सर्वेक्षण के अनुसार, 60% से अधिक यादवों ने जद(यू) प्रत्याशियों को समर्थन दिया और ओबीसी मतदाताओं ने राजद का समर्थन किया।
   - नितीश कुमार की लोकप्रियता भी निर्णायक रही।
   - भाजपा की 'बिहारी बनाम बाहरी' रणनीति, जो मोदी पर अत्यधिक निर्भर थी, उल्टा असर कर गई।
   - जनता ने नितीश के *'सुशासन'* को सराहा, जिसमें कानून-व्यवस्था सुधार, बुनियादी ढाँचे का विकास और आर्थिक प्रगति शामिल थी।

महागठबंधन की सफलता बाद के स्थानीय चुनावों, उपचुनावों और विधान परिषद चुनावों में भी परिलक्षित हुई।

**आंतरिक संकट और विघटन**

हालाँकि सर्वेक्षण के नतीजे बताते हैं कि अधिकांश लोग इस गठबंधन को *राजनीतिक रणनीति* मानते थे, न कि *साझा वैचारिक एजेंडा*।

- राजद पर भ्रष्टाचार के आरोप और **शहाबुद्दीन** की जेल से रिहाई ने नितीश की छवि को धक्का पहुँचाया।
- **तेजस्वी यादव** उभरते हुए उत्तराधिकारी के रूप में सक्रिय थे।
- नितीश को लगने लगा कि राजद का दबदबा उनकी पार्टी को हाशिए पर धकेल रहा है।

2019 आम चुनावों को ध्यान में रखते हुए, नितीश ने भाजपा से नजदीकी बढ़ाई और **महागठबंधन से बाहर निकलकर एनडीए में वापसी की**, जहाँ वे फिर से मुख्यमंत्री बने।

**बिहार NDA 3.0 और 4.0 (जुलाई 2017 – अगस्त 2022)**

नितीश कुमार के पुनः भाजपा के साथ जाने के बाद मंत्रिमंडल में विभागों का बँटवारा पहले वाले NDA गठबंधन की ही तरह संतुलित रहा। **सुशील कुमार मोदी**, जिन्हें जद (यू) को NDA में वापस लाने का सूत्रधार माना गया, फिर से उपमुख्यमंत्री बने। इस गठबंधन ने 2019 लोकसभा चुनाव में शानदार प्रदर्शन किया और **40 में से 39 सीटें जीतीं**, लेकिन 2020 के विधानसभा चुनावों में यह गठबंधन बुरी तरह कमजोर पड़ा। भाजपा ने जद (यू) से कहीं अधिक सीटें जीतीं, जबकि विपक्ष का मत प्रतिशत लगभग बराबरी पर रहा। **राजद सबसे बड़ी पार्टी** बनकर उभरी। यह नतीजा लंबे समय से चले आ रहे *विरोधी लहर (Anti-incumbency),* नितीश कुमार के खिलाफ *मतदाता थकान,* सीमांचल क्षेत्र में अल्पसंख्यक वोटों के बँटवारे (जहाँ AIMIM ने 5 सीटें जीतीं), और *मोदी ब्रांड* की अपील का मिश्रण था।

**NDA 4.0** में भाजपा का दबदबा साफ दिखा। लंबे समय से सहयोगी रहे सुशील मोदी को हटाकर **तारकिशोर प्रसाद और रेणु देवी** को उपमुख्यमंत्री बनाया गया। विधानसभा अध्यक्ष के रूप में भाजपा के **विजय कुमार सिन्हा** को नामित किया गया और प्रमुख मंत्रालय भाजपा ने अपने पास रखे। राज्य नेतृत्व में दोनों सहयोगियों के बीच संचार की कमी और मीडिया में लगातार बयानबाजी ने गठबंधन की भावना को कमजोर किया। केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर असंतोष और भाजपा के दबाव में नितीश कुमार की स्वायत्तता बनाए रखने की कोशिशों ने (जहाँ तेजस्वी यादव ने भी परोक्ष समर्थन दिया) एक नए **महागठबंधन प्रयोग** की ज़मीन तैयार की।

**महागठबंधन 2.0 (अगस्त 2022 – अब तक)**

कुछ ही महीनों में, इस बार **राजद प्रमुख सहयोगी** के रूप में सत्ता में लौटा। लेकिन शुरुआत से ही स्थिति सहज नहीं रही। दो प्रमुख मंत्रियों ने महज दो महीनों में इस्तीफा दे दिया और जद (यू) अपने विधायकों को एकजुट रखने में संघर्ष करता दिखा। असहमति के संकेत साफ नज़र आ रहे

हैं। नितीश कुमार के सामने चुनौती है कि वे मौजूदा सहयोगियों को संतुष्ट रखें।
साथ ही, **गैर-यादव ओबीसी वोटों को आकर्षित करने के लिए कोई सशक्त क्षेत्रीय चेहरा नहीं** है। रामविलास पासवान की मृत्यु के बाद पासवान वोटों में बिखराव ने भाजपा को फिर से रणनीति बनाने पर मजबूर कर दिया।
इस बीच कयास लगाए जा रहे हैं कि:

- नितीश कुमार फिर से भाजपा का दामन थाम सकते हैं,
- या जद (यू) और राजद का विलय हो सकता है।

हालाँकि, जद (यू) ने दोनों दावों को सिरे से नकार दिया है। लेकिन राजनीति के इतिहास में नितीश कुमार कई बार वही कदम उठा चुके हैं, जिसे पहले खारिज किया था। यही कारण है कि **बिहार में गठबंधनों की कहानी और उनके रहस्य (enigmas)** आने वाले समय में भी विश्लेषकों को उलझाए रखेंगे, खासकर 2024 लोकसभा चुनावों की पृष्ठभूमि में।

**V. क्यों कहें इन्हें रहस्यमयी (Enigmatic)?**

यदि इन घटनाओं को व्यापक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो साफ है कि गठबंधन हमेशा से ही राजनीति शास्त्रियों के लिए *जिज्ञासा का विषय* रहे हैं। **चौथे पार्टी सिस्टम** (Fourth Party System) के गठबंधनों ने एक नए तरह की *विचित्रता* दिखाई है, जहाँ दशकों की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रखने वाले दल भी एक साथ आ गए—जैसे जद (यू)-राजद या कांग्रेस के साथ जद (यू)।
बिहार में चार प्रमुख गठबंधन बने:

- महागठबंधन 1.0 और NDA 4.0 (दोनों *पूर्व-निर्वाचन गठबंधन*),
- NDA 3.0 और महागठबंधन 2.0 (*पश्चात-निर्वाचन गठबंधन*)।

इनमें से दो भाजपा के साथ थे और दो उसके खिलाफ। लगातार सहयोगियों का *आना-जाना* (E. Sridharan के अनुसार *'incongruent'*) और बीच कार्यकाल में टूटने से यह अस्थिर रहे।
सबसे महत्वपूर्ण यह कि **नितीश कुमार लगातार मुख्यमंत्री बने रहे**, भले ही राजनीतिक समीकरण कितनी बार बदले। यह बिहार की राजनीति को और रहस्यमयी बना देता है।

**VI. निष्कर्षात्मक विश्लेषण : राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव और 2024 का रास्ता**

21वीं सदी के इस दौर में भारत के लोकतंत्र की यात्रा को देखते हुए बदलती चुनावी और पार्टी प्रणाली, और नितांत नए गठबंधनों को समझना आवश्यक हो गया है। 2014 से भाजपा की सफलता ने राजनीतिक प्रवृत्तियों को पलट दिया है।
हालाँकि भाजपा का दबदबा स्पष्ट है, लेकिन इसे पूर्ण वर्चस्व कहना अतिशयोक्ति होगी।

- भाजपा की राष्ट्रीय वोट हिस्सेदारी अब भी लगभग **40%** है।
- *FPTP प्रणाली* और *विभाजित विपक्ष* ने इसे लाभ पहुँचाया है।
- दक्षिण भारत (कर्नाटक और तेलंगाना को छोड़कर) और अल्पसंख्यक वोट बैंक अब भी भाजपा के लिए चुनौतियाँ बने हुए हैं।

दूसरी ओर, विपक्ष के पास स्पष्ट एजेंडा, ठोस संदेश और प्रधानमंत्री मोदी के कद का करिश्माई चेहरा नहीं है। *सिर्फ भाजपा की गलती पर उम्मीद करना विपक्ष के लिए राजनीतिक आत्मघात होगा।*
हाल के चुनाव परिणाम (यूपी, उत्तराखंड, मणिपुर, गोवा में भाजपा की जीत, पंजाब में AAP का उदय और महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी का पतन) बताते हैं कि भाजपा की चुनावी मशीनरी मज़बूत है।
**बिहार**, जहाँ **40 लोकसभा सीटें** हैं, 2024 की लड़ाई में निर्णायक भूमिका निभाएगा। अगर अगस्त 2022 के **India TV के सर्वेक्षण** पर विश्वास करें, तो NDA की सीटें आधी हो सकती हैं (2019 में 40 में से 39 जीतने की तुलना में)।
इसलिए सवाल है कि:

- क्या महागठबंधन 2.0 टिक पाएगा और अन्य राज्यों में भी गठबंधन मॉडल बनेगा?
- या बिहार में नए राजनीतिक समीकरण उभरेंगे?

2024 से आगे का चुनाव ही इसका उत्तर देगा।

**संदर्भ सूची (हिंदी संस्करण)**


1. वीनेर, एम. (1968). *भारत में राज्य राजनीति*। प्रिन्सटन, न्यू जर्सी: प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi/10.1515/9781400879144
2. चिब्बर, पी. और वर्मा, आर. (2018). *विचारधारा और पहचान: भारत की बदलती पार्टी प्रणाली*। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi.org/10.1093/oso/9780190623876.001.0001
3. रॉय, पी. एवं सोपारिवाला, डी. आर. (2019). *निर्णय: भारत के चुनावों का विश्लेषण*। इंडिया: विंटेज बुक्स।
4. राथर, टी. (2016). *भारत में गठबंधन राजनीति के राजनीतिक विकास*। रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, 11(3), 216–228। https://doi.org/10.5958/2321-5828.2020.00036.4
5. कैलाश, के. के. और अरोड़ा, बी. (2017). *भारत में संघीय गठबंधन: रणनीतिक गणना और घूमने वाले सहयोगी*। स्टडीज़ इन इंडियन पॉलिटिक्स, 4(1), 63–76। https://doi.org/10.1177/2321023016634940

6. मुरली, के. (2011). *बदलते गठबंधन और प्रतिबद्धताएँ: आंध्र प्रदेश और बिहार*। में: *जाति, वर्ग और राजनीति – भारत में आर्थिक नीति की सामाजिक और राजनीतिक उत्पत्ति* (पृ. 159–205)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi.org/10.1017/9781316659007.005
7. कुमार, ए. (2011). *भारत में राज्य राजनीति का पुनर्विचार: क्षेत्रों के भीतर क्षेत्र*। इंडिया: रूटलेज, टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप।
8. सिन्हा, ए. (2020). *नीतीश कुमार और बिहार का उदय*। पेंगुइन बुक्स।
9. सिंह, एस. (2018). *जेपी से बीजेपी: लालू और नीतीश के बाद बिहार*। सेज पब्लिकेशन्स।
10. कुमार, एस. (2017). *उत्तर-मंडल राजनीति में बिहार: बदलते चुनावी पैटर्न*। सेज पब्लिकेशन्स।
11. हेबर, एन. (2022, 27 जुलाई)। *महागठबंधन टूटने के पीछे की कहानी*। द हिंदू। उपलब्ध: https:///news/national/news-analysis-thestory-behind-the-mahagathbandhan-break-up/article19372179.ece
12. किशोर, पी. (साक्षात्कार). (2022, 15 मार्च)। *2024 अभी तय नहीं, राज्य चुनाव लोकसभा चुनावों का परिणाम तय नहीं कर सकते*। इंडिया टुडे। उपलब्ध: https://www.indiatoday.in/amp/india/story/state-2024lok-sabha-elections-bjp-prashantkishor-1925780-2022-03-15
13. मैथ्यू, एल. (2020, 11 नवम्बर)। *बिहार चुनाव परिणाम 2020: भाजपा और एनडीए के लिए पाँच बड़े निष्कर्ष*। द इंडियन एक्सप्रेस। उपलब्ध: https://indianexpress.com/article/explained/bihar-election-results-bjp-nda-narendra-modi-7047483
14. द एडिटर। (2022, 10 अगस्त)। *एनडीए सरकार की बिहार में अस्थिर शुरुआत, भाजपा ने सुशील मोदी जैसे पुराने चेहरों को दरकिनार किया*। द इकोनॉमिक टाइम्स।
15. नारायणन, वी. जी. (2022, 16 अगस्त)। *जेडीयू-राजद गठबंधन का बिहार की राजनीति पर क्या मतलब है*। स्वराज्य। उपलब्ध: https://swarajyamag.com/politics/what-the-jdu-rjd-alliance-means-for-politics-in-bihar
16. सिंह, डी. के. (2022, 17 सितम्बर)। *क्यों बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राजद-जेडीयू विलय योजना को ना नहीं कह सकते*। द प्रिंट। उपलब्ध: https://theprint.in/opinion/politically-correct/for-once-nitish-kumar-is-at-lalu-and-tejashwiyadavs-mercy/1170969/